कुंभ आया रे !

मित्रों, बड़ी धमा चौकड़ी मची इस बीच प्रयागराज में । जम कर पुण्य काटा लोगों ने । प्रशासन ने पहले से ही टपास रखा था कि 7 करोड़ लोग संगम में पवित्र स्नान करेंगें । किया भी । जमकर नहाया गया । इत्ती ठण्ड में भी नहाया । गजब की आस्था । भयंकर, अटूट विश्वास । स्वर्ग पक्का । पाप धुल गये । गंगा प्रदूषित, अपन स्वच्छ ।

दुनिया का सबसे बड़ा जमावड़ा । यूरोप के कई देशों के बराबर लोगो ने जमकर स्नान किया । दुनिया परेशान । किसी धार्मिक आयोजन में आज तक इतने लोग इकट्ठे नहीं हुये कहीं पर । काफी विदेशी इस भीड़ को देखने आये । भीड़ एक बाजार होती है । यहॉ की भीड़ बाजार के साथ साथ खुद प्रोडक्ट भी थी । अजूबा । यह पहला कुंभ नहीं था । आज से 78 साल पहले के कुंभ में मात्र 15-20 हजार लोग इकट्ठे हुये थे । इतिहास को छोड़िये । कुछ साल पहले हरिद्वार के कुंभ मे भी इतनी भीड़ नहीं थी । कारण है प्रयाग का विशाल गंगा का कछार । इतनी जगह है कि 10 करोड़ लोग भी यहॉ इकट्ठे हो सकते है । 10 करोड़ की आबादी कछार में खड़ी हो सकती है लेकिन इलाहाबाद शहर 10 लाख को भी नहीं संभाल सकता है ।

फेस्टिवल ऑफर, धंधे का फार्मूला । उत्तर प्रदेश सरकार और मीडिया ने खड़ा किया यह महाकुंभ । नहीं, नहीं मुलायम सिंह अमृत का कलष लेकर नहीं भागे थे और न ही मीडिया वालों ने समुद्रमंथन किया था । यह गलती तो देवता और असुर बहुत पहले कर चुके हैं । कमाने का अवसर कुंभ । हल्ला मच गया । कुंभ आया रे । दौड़ो । छूटने न पाये । नहाओ । पुण्य मिलेगा । स्वर्ग मिलेगा । बस तैयारी शुरू ।

प्रयाग के कुंभ को एक पर्यटन के तौर पर विकसित किया गया । भीड़ बुलायी गयी । तीर्थ भ्रमण और इण्टरटेनमेंट भी । दोनो हाथों में लड्डू । भीड़ आयी । साथ पैसा लायी । धंधा भी हो गया । गंगा स्नान भी हो गया । चकाचक । दोनों पार्टी खुश ।

एक बड़ी मजेदार बात यह देखने को मिली कि इतने बड़े बड़े महात्मा इकट्ठे थे, वी.आई. पी. आये, संगम में नहाये, इतनी श्रद्धा, इतना विश्वास पर गंगा जल से आचमन करने का खतरा कुछ ही ने उठाया । गंगा मुक्ति देती है पर गंगा जल से तत्काल मुक्ति न मिल जाये इसलिये सब के साथ मिनरल वाटर की बोतलें भी थी । नहाने तक का रिस्क बहुत था । आस्था एक तरफ जान एक तरफ । घुटने भर छिछले पानी में प्रशासन ने लोट्वा दिया ।

करोड़ो लोगों को बसाने के लिये एक अलग शहर बसाया गया गंगा के रेतीले कछार में । 1200 हेक्टेयर का क्षेत्र, 9 सेक्टर, 11 पीपे के पुल, पहली बार संगम नोज तक पक्की सड़क । पूरा मेला क्षेत्र प्रकाश से जग-मग । टेण्डर निकले । काम शुरू । कमाई शुरू । शहर की बनी बनायी सड़कों पर दोबारा डामर की परत चढ़ी । जो सड़कें खराब थीं उनको टैम्परेरी टिप-टॉप किया गया । पैसा परमानेन्ट का जेब में । कौन सा कुंभ साल भर रहना है । डेढ़ महीने तक सड़के चल जायें बस ।

मित्रों, मेरे घर के सामने की सड़क पिछले 25 साल से विधवा पड़ी है । कोई नेता, इन्जीनियर उसकी मॉग डामर, गिट्टी से नहीं भरता । मेरी गली में किसी पावरफुल मनई का वास नहीं है । जबकि मेरी गली 40 फिट चौड़ी है । शहर में शायद ही इतनी चौड़ी गली हो कहीं पर । मेरी सड़क इस कुंभ में भी नहीं बनी । अगले 12 साल तक कोई चान्स नही है ।

एक होता है बुलडोजर । बुलडोजर से अवैध निर्माण को ध्वस्त किया जाता है । अवैध निर्माण अधिक्तर गरीब लोग करते हैं । अमीर अवैध निर्माण नहीं करते । बुलडोजर प्रशासन का एक मनोरंजन का साधन है । जब अधिकारियों को बोरियत हाती है तो वह बुलडोजर उठाकर गरीबों को बेघर करने चल देते हैं । अवैध निर्माण एक बड़ी समस्या है पर अधिकारियों का पक्षपातपूर्ण रवैया और परपीड़न की प्रवशत्ति अखरने वाली होती है । कुंभ की तैयारी में बुलडोजर ने खूब मनोरंजन किया अधिकारियों का । इन्होंने ध्वस्तीकरण की इंतहां कर दी । सारा मलबा नाली, नाले में । परिणामस्वरूप शहर के कई मुहल्ले अपने ही गंदे पानी में हफ्तों जलमग्न रहे ।

शहर के कई बड़े नाले यमुना और गंगा में गिरते हैं । इनको कुंभ के समय तक रोकना एक बड़ी समस्या थी । तय हुआ कि सीवर लाईन बिछायी जाये जो गंदा पानी शहर के बाहर गंगा प्रदूषण प्लांट में ले जाये । 5.5 करोड़ की लागत से पाईप बिछायी गयी । पहले दिन जैसे ही पानी छोड़ा गया पाईप कई जगह से फट गया और सड़क धंस गयी । वहॉ तालाब बन गया । ऐसी ईमानदारी से काम किया यारों ने कि एक दिन भी पाईप नहीं चली । जियो शेरों ।

मीडिया ने भी खूब चाँदी काटी । दुनिया भर के अखबार और टेलीविजन वाले इकट्ठे हुये । वेबसाइटें चलीं ।

इतना बड़ा आयोजन सफलता पूर्वक निकाल ले गया प्रशासन, बधाई का पात्र है । आई. एस.आई. वालों से काफी उम्मीदें थीं कि वह भी पाप धोने या पापियों के प्राण हरने आयेंगे पर नहीं आये । अफसोस । आतंकवाद की पताका लहराने का एक गोल्डेन चान्स निकल गया । कई देशों की इण्टेलिजेंस एजेंसियाँ सक्रिय थीं । मेला अब खत्म है । सब अपनी आस्था, विश्वास सूटकेस में भर कर लाये थे । पुण्य होल्डाल में लपेट कर चले गये । पुलिस वालों ने बड़ा कष्ट सहकर मेजबानी की । डेढ़ महीने तक प्रेस वालों और पुलिस वालों में तना-तनी रही । वीरों ने अखबारनवीसों के हाथ पैर तोड़े तो कलम के सिपाहियों ने महात्माओं के मुँह से पुलिस वालों को शाप दिलवाये ।

सरकार ने कमाने का एक बढ़िया तरीका खो दिया । कुंभ को एक दर्जन विदेशी कम्पनियों से प्रयोजित करवा देते । 25-50 करोड़ रूपये ऐसे ही मिल जाते । बड़े बड़े पंडालों के उपर रिबॉक, कोका, पेप्सी, मेकडॉनल्ड के होल्डिंग होते तो वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा सत्य हो जाती । शाही स्नान के दिन नागा साधु हाथ में पेप्सी लेकर चलते तो पेप्सी को दैवीय पेय माना जाने लगता । हो सकता था चिलम का स्थान कोका कोला ले लेता । बहुत बड़ा चान्स मिस किया सरकार ने । पर अब पछतायें हो का जब चिड़िया चुग गयी खेत ।

पूर्णिमा तक क्षेत्र खाली होने लगा । आज तो वहॉ धूल उड़ रही है । मॉ गंगा ने कई करोड़ श्रद्धालुओं के पाप धोये । अब बचा है करोड़ो लोगों के द्वारा गिफ्ट किया हुआ कूड़ा-कचड़ा । जोकि मॉ गंगा को ही अर्पित होगा । शहर के नाले भी खोल दिये जायेंगे । पाप धोने का काम तो पार्ट टाइम जॉब है । असली काम गंगा जी का शहर का गंदा

पानी ढ़ोना है । अधजली लाशों को शरण देना है । गंगा प्रदूषण नियंत्रण तो एक मजाक भर है ।

‘‘अरे, अरे भाई साहब वह मेरी तौलिया है । कहॉ लिये जा रहें हैं’’ ।

‘‘कुंभ में आये हुये सभी नर–नारियों का मेला प्रशासन स्वागत करता है । कृपया अपने सामान की खुद देखभाल करें’’ ।

‘‘हर हर गंगें’’, ‘‘गुड्डुप’’ ।